ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 556-560

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

समीक्षावादी चित्रों का कला तत्वों एवं सिद्धान्तों से आधार पर समीक्षा एवं मूल्यांकन

डॉ0 अमृत लाल

एसोसिएट प्रोफेसर– ललित कला विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received- 05.08.2020,Revised- 09.08.2020, Accepted-13.08.2020 E-mail: - aaryvart2013@gmail.com

सारांश :*समीक्षावाद की प्रथम चित्र ददर्शनी में भाग लेने वाले कलाकारों में सबसे पहले हम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर राम चन्द्र शुक्ल का नाम लेना चाहते है। श्री शुक्ल ने इस प्रदर्शनी में अपने चार चित्र प्रसतुत किये 'आधुनिक कला की दौड़', 'कुर्सी में आपात काल', 'राजनीतिक यथार्थ' तथा 'बाढ़ पीड़ित सेवा केन्द्र'। आधुनिक कला की दौड़ नामक चित्र में उन्होंने गधे को अपनी शरीर पर पाश्चात्य अरूपवादी कला चित्रित कर पश्चिमी कला प्रचार के इशारे पर पारितोषिक प्राप्त करने की लालच में बेतहाशा दौड़ते हुए दिखाया है जिससे देखकर गाँव का कुत्ता भी भड़क उठा है और गधे के पीछे पड़ गया है। यह चित्र आधुनिक पाश्चात्य कला के प्रभावित अंधे कलाकारों पर एक सटीक समीक्षा और उनकी मूल्यांकन प्रस्तुत करता है और एसे कलाकारों की आँख खोलने में समर्थ है।*

कुंजीभूत शब्द–समीक्षावाद, चित्र ददर्शनी, चित्रकला विभाग, प्रदर्शनी, आधुनिक कला, आपात काल।

समीक्षावादी चित्रों का कला तत्वों एवं सिद्धान्तों के आधार पर समीक्षा एवं मूल्यांकन– समीक्षावादी कलाकारों ने वर्तमान जीवन तथा समाज की समीक्षा को अपना लक्ष्य माना है। समीक्षा अब तक शब्दों के द्वारा ही की जाती थी। चित्रकला भी रंग, रेखा तथा आकारों की एक भाषा है, जिसके द्वारा विचारों तथा भावनाओं की अभिव्यंजना की जाती है अभिव्यंजना का मूलाधार प्रतीकों का प्रयोग होता है। अतः ये कलाकार भी प्रतीको के द्वारा अपनी बात तथा भावना प्रगट करने का प्रयास करते है किन्तु इनका व्यंग समीक्षात्मक होता है। वे किसी वस्तु, .श्य, घटना या समस्या को ज्यो का त्यो चित्रित न कर उस पर अपनी समीक्षा को प्रतीकात्मक ढंग से व्यंगात्मक शैली में अभिव्यक्त करते है। समीक्षावादी कला की प्रथम प्रदर्शनी दिल्ली में ऑल इंडिया फाइन ऑर्ट्स क्राट सोसायटी, नई दिल्ली (१५ जनवरी से १७ जनवरी तक १६७६) में, द्वितीय प्रदर्शनी जहाँगीर आर्ट गैलरी, बम्बई (३ नवम्बर से ६ नवम्बर १६८०) में, तृतीय प्रदर्शनी गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (१६ अक्टूबर १६ अक्टूबर १६८१) में, चतुर्थ प्रदर्शनी ऐकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स कलकत्ता में व प्रोफेसर राम चन्द्र शुक्ल की समीक्षावादी एक चित्र प्रदर्शनी तथा वाराणसी में कलाकार सम्मेलन और प्रोफेसर राम चन्द्र शुक्ल की समीक्षावादी एकल चित्र प्रदर्शनी दरभंगा कक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय में (२७ फरवरी १६८४ में आयोजित की गई। इस समीक्षावादी एकल चित्रकला प्रदर्शनी के बारे में स्वयं चित्रकार का विचार निम्नवत् है–

प्रो० राम चन्द्र शुक्ल के शब्दानुसार "मेरे अधिकांश चित्र लोक भावना से प्रेरित है। समाज की वर्तमान समस्यायें, परिस्थितियाँ, विद्रूपताये मुझे विशेष रूप से विवश करती रही है, अभिव्यक्ति के लिए। मेरा मन और मस्तिष्क उससे आक्रात तथा उद्वेलित होता रहा है। आज जो सामाजिक विषय परिस्थितियाँ हमारे सामने प्रस्तुत है उनका समाधान बड़ा जटिल सा लगता है और जटिलता बढ़ती ही जाती सी मालूम पड़ती है। इससे सम्पूर्ण समाज आतकित तथा निराश्रित सा महसूस कर रहा है। प्रश्न इन समस्याओं से दूर भागने का नहीं है, बल्कि इनका डट कर मुकाबला करने का है।''

चित्रकार, साहित्यकार, कवि, लेखक या अन्य कलाकार अपने जमाने के जागरूक प्रहरी होते है। उनका कार्य है लोगों को सचेत करना, जगाना और समस्याओं से डट कर लोहा लेने की प्रेरणा देना। मेरे चित्र इन्ही उद्देश्यों से प्रेरित है। आज हमारे देश में राजनीतिज्ञता (नेतागिरी) खुद एक समस्या बन गई है। इसका जीवन तथा समाज के हर क्षेत्र पर बेतुका असर पड़ रहा है। मेरे चित्रों में इसकी अभिव्यक्ति स्वतः होती रही है, किन्तु इसका सम्बन्ध किसी राजनीतिक पार्टी अथवा किसी राजनीतिक क्रान्ति विशेष से जरा सा भी नहीं है। इनका सम्बन्ध केवल राजनीति में आवश्यक रूप से व्याप्त भ्रष्टाचार तथा विदूपता से ही है। भ्रष्टाचार पर विदूपता केवल इसी क्षेत्र में हो ऐसा भी नहीं है। इसका असर प्रत्येक सामाजिक क्षेत्र पर यथेष्ट रूप में पड़ रहा है। इसलिए यह केन्द्र बिन्दु बन गई है। जब तक भ्रष्टाचार और विद्रूपता समाज से दूर नहीं की जाती समाज स्वस्थ नहीं हो सकता, सौन्दर्य, सुख्ख, शान्ति का वातावरण बन नहीं सकता, जिसकी अपेक्षा कलाकार ही नहीं सारा मानव समुदाय रखता है। इसलिए हर जागरूक क्रान्ति के प्रथम कर्तव्य हो जाता है, इनसे संघर्ष करने का। यहीं संघर्ष आज के कलाकार के सामने प्रमुख है। कलाकार का काम आर्दश कल्पना लोक का निर्माण करना नहीं है बल्कि मानव समाज को स्वस्थ समृद्ध मानवीय गुणों से परिपूर्ण तथा प्रगतिशील बनने के लिए

प्रेरित करता है।

समीक्षावाद की प्रथम चित्र प्रदर्शनी में भाग लेने वाले कलाकारों में सबसे पहले हम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर राम चन्द्र शुक्ल का नाम लेना चाहते है। श्री शुक्ल ने इस प्रदर्शनी में अपने चार चित्र प्रस्तुत किये–"आधुनिक कला की दौड़", "कुर्सी में आपातकाल", "राजनीतिक यथार्थ" तथा "वाढ़ पीड़ित सेवा केन्द्र"। आधुनिक कला की दौड़" नामक चित्र में उन्होंने एक गधे को अपनी शरीर पर पाश्चाम्य अरूपवादी कला चित्रित कर, पश्चिमी कला प्रचार के इशारे पर पारितोषिक प्राप्त करने की लालच में बेतहाशा दौड़ते हुए दिवाया है जिससे देख्व कर गाँव का कुत्ता भी भड़क उठा है और गधे के पीछे पड़ गया है। यह चित्र आधुनिक पाश्चात्य कला के प्रभावित अधे कलाकारों पर एक सटीक समीक्षा प्रस्तुत करता है और ऐसे कलाकारों की आँख्व खोलने में समर्थ है।

प्रो० रामचन्द्र शुक्ल के अधिकांश चित्र प्रतीकात्मक एवं व्यंगात्मक है, किन्तु सरल, सुबोध तथा स्पष्ट होने से कलात्मक भाषा इतनी सुगम हो गई है, जिससे आम आदमी भी उसकी अभिव्यंजना को सहज ही ग्रहण कर सके।

उनका दृष्टिकोण यह भी रहा है कि विदेशी आधुनिककला की प्रवत्तियों में न बहकर अपने समकालीन समाज, जीवन, आशा–आकांक्षाओं तथा अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर शैली को इसके अनुरूप ढाला है। यही कारण है कि उन्होंने पाश्चात्य आधुनिक कला की प्रवृत्तियों से अपने को मुक्त रखने का प्रयास किया है। उनका इरादा प्राचीन भारतीय शैलियों के दायरे में बंधने का भी नहीं रहा, फिर भी उनसे प्रेरणा तो बराबर लेते रहे है क्योकि वहीं हमारी वर्तमान कला प्रगति की आधारशिला है। उससे कटते ही हम धराशायी हो जायेंगे।

उनका कहना है कि आपके सम्मुख मेरे जो चित्र प्रस्तुत है, उसमें से अधिकांश ऐसे है जिन्हें मै "समीक्षावादी" कहता हूँ क्योकि इनका विशेष लक्ष्य समाज तथा जीवन की ज्वलंत गतिविधियों की दो टूक समीक्षा प्रस्तुत करना ही है। समीक्षा के बिना सत्य .ष्टिगत नहीं होता और समाज की वास्तविक प्रगति भी असभव है, विशेषकर जनतात्रिक व्यवस्था में। "समीक्षावाद" को भारतीय आधुनिक कला का प्रथम मौलिक प्रयास माना गया है और दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता आदि कई नगरों में इसकी प्रदर्शनी आयोजित हो चुकी है।

राम चन्द्र शुक्ल की समीक्षावादी एकल चित्र प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्र स्थान दरभंगा कक्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (२७ फरवरी १९८४) उद्घाटनकर्ता–प्रोफेसर आर० पी० मिश्र, कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

इनका दूसरा महत्वपूर्ण चित्र है 'कुर्सी में आपातकाल' इस चित्र में एक विशाल ख्वाली कक्षा में, बीचोबीच एक बड़ी कुर्सी में एक भारी भरकम उल्लू को आसीन दिख्वाया गया है और उसके पीछे अरगनी पर सुनहले रंग के अनेक छोटे उल्लुओं की पक्ति चित्रित है, जिसे देखकर वह पुराना शेर याद आ जाता है "हर शाख पे उल्लू बैठा है, अंजाम–ए–गुलिस्ता क्या होगा?" यह चित्र वर्तमान काल के अधिकारी वर्ग की दशा पर शक्तिशाली ढंग से चोट करता है।

इनके तीसरे चित्र में राजनीतिक यथार्थ' दिखाया गया है। एक हरे भरे बाग के बीच में आराम कुर्सी पर आँख बन्द किये एक नेता पदासीन है। उसके पैरों को चूमता हुआ एक दुख्वी व्यक्ति दिखाया गया है अर्थात् पदासीन व्यक्ति पद पाकर अपने स्वार्थ लाभ के पश्चात आँख्व मूद कर आराम करने लग जाता है और लोग उसका पद चुम्बन करने में ही सफलता की आशा करने लगते है। विपक्षी दल येन केन प्रकारेण सत्ता को उलटना ही अपना धर्म समझने लगता है, एक सच्चाई है जिसे जोरदार ढंग से कलाकार श्री शुक्ल ने प्रकट किया है।

उनका चौथा चित्र 'बाढ़ पीड़ित सेवा केन्द्र' अधिकारी वर्ग के समाज विरोधी कार्यों की तीरवी समीक्षा प्रस्तुत करता है। जिस समय बाढ़ की विभीषिका से सारा देश त्रस्त हो चुका है और जनजीवन पूरी तरह अस्त–व्यस्त हो गया था, जगह–जगह बाढ़ पीड़ित सेवा केन्द्र खोले जा रहे थे। वहीं यह भी सुना गया कि मगरमच्छ अफसर अपने ही निहित स्वार्थपूर्ति में लगे थे। इसी को कलाकार ने चित्र में अधिकारी के स्थान पर मुँह फाड़े एक विकारल मगरमच्छ को चित्रित किय है। श्री शुक्ल की कलात्मक भाषा अत्यन्त स्पष्ट, पैनी, बोधगम्य और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत हुई है, जो कला को नयी दिशा प्रदान करने में समर्थ है।

"कुर्सी का चक्र"– पहाड़ी पर कुर्सी अपने वाहन (गिरगिट) पर आरूढ़ नेता उसके चक्कर लगा रहा है। गिरिगिट जैसे रंग बदलने वाला नेता कुर्सी के चक्कर लगा रहा है। ये तो हम और आप देख रहे है। वस्तुतः वह कुर्सी पर डेरा डाले हुये है...... की चौकीदारी कर रहा है कि कोई और न इसे लपक लें।

"अतिम भोज"– समाज के रहनुमा (नेतृत्व करने वाले चाहे वे नेता हो, धन श्रेष्ठि या फिर तस्कर आज भी समाज के भक्षक है) शुक्ल जी की तुलि द्वारा इसे (इस भक्षण को) व्यंग्यात्मक रूप में ऐसे संयोजित किया गया है कि तथ्य स्वयं साकार हो गये।

कलाकार डॉ० गोपाल मधुकर चतुर्वेदी ने इस प्रदर्शनी में अपने पाँच चित्र प्रदर्शित किये–'खून की राजनीति', 'सत्ता और जनता' तथा 'मूर्तिकार का भ्रम'। प्रदर्शनी में इनका सबसे सशक्त चित्र था 'खून की राजनीति' इस चित्र में यह

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

बताने का प्रयत्न किया गया है कि साम्प्रदायिक तनाव के पीछे किनका स्वार्थ निहित होता है। उनका दूसरा महत्वपूर्ण चित्र था 'सृष्टा की परेशानी'। इनमें सशक्त प्रतीकों के माध्यम से परिवार नियोजन द्वारा उत्पन्न मानवीय समस्या पर प्रकाश डाला है। 'सत्ता और जनता' नामक चित्र में सत्ता के लिए जनता को कैसे बरगलाया जाता है, इस पर कलाकार ने तीक्ष्ण प्रहार किया है। 'गणिका के पतन' नामक चित्र में सदियों से शोषित बेसहारा नारी को कैसे पतनोन्मुख बना दिया जाता है, दिखाया गया है। 'मूर्तिकार का भ्रम' नामक चित्र में कलाकार शराब की बोतल को ही कैसे कला.ति समझ लेता है और अपनी सारी कला कैसे गँवा बैठता है, को प्रदर्शित किया है। इन सभी चित्रों में अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं पर सीधी तथा स्पष्ट समीक्षायें प्रस्तुत की गई

"आधुनिक ईसा"– कृषक जो अपने श्रम के द्वारा अन्न उपजाता है और अकेला ही नही बल्कि समाज का भी पेट भरता है। वही कृषक जब समाज से कुछ मांगता है तो उसे क्या मिलता है? उसी प्राप्ति को व्यंग्यात्मक रूप में पुरातन ईशु की छाया को आधार बनाकर प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है। ईशु के जन–जन का हित करने के लिये सलीब मिली। इसी प्रकार आज के कृषक को हमारे देश का नेतृत्व सुविधायें पहुंचाने के नाम पर कृषक के हल को सलीब बना...... उस पर टांगकर वाहवाही लूट लेना चाहता है। कोई नेता तन ढाँक रहा है। आशय है कि सुविधायें के नाम पर . षक को सलीब पर चढ़ाया जा रहा है। शैलीगत दृष्टिकोण से इस की मूल–प्रेरणा अपने देश की वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, वैचारिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियां है, अनावश्यक जटिलताओं से मुक्त कर एक सरल तथा प्रभावशाली भाषा का रूप दिया है।

"हर शाख पर उल्लू बैठा है"–प्रस्तुत चित्र वर्तमान समय के राजनेताओं की मानसिकता का नि.ष्ट चरित्र का प्रतीक है जो समाज के हितो के बारे में सोचकर राजनीति को व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते है। फलतः समाज का प्रत्येक भाग जिसकी प्रगति के लिये निस्वार्थ भाव और पूर्ण समर्पण व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। वहां हीन चरित्र के व्यक्ति तथा धूर्त लोगों मे विशिष्टि स्थान पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। गोपाल मधुकर के चित्र प्रतीकात्मक, व्यंगयात्मक विचार प्रधान है तथा संवेगात्मक शैली में अभिव्यंजना किया है। प्राय इसमें चित्र तैल, जल तथा टेम्परा रंग विधि का प्रयोग किया है।

"जन–तंत्र"– अर्द्धनारीश्वर आर्थात शिव पार्वती का युग्म अर्थात प्रकृति पुरुष का युग्मधविष्णु के हाथ में चक्र जो राक्षसो, दुर्दान्त दानवों के लिये मृत्यु......... साक्षात् मृत्यु का अस्त्र । इस चित्र में हमारे द्वारा चुना हुआ नेता पुरुष या नारी कोई भी हो सकता है । अतः उसे अर्द्धनारीश्वर के रूप में विष्णु का रूप देकर हाथ में चक्र रखा गया है जो आज के युग के विष्णु रूपी नेता के हाथ में "मेरी सत्ता बनी रहे, इसका प्रतीक मात्र रह गया है। जनता चीख रही है......... चिल्ला रही है परन्तु अर्द्धनारीश्वर के रूप में गरुड़ पर आसीन विष्णु (जानबुझ कर शिव के स्थान पर विष्णु को स्थान दिया गया है) अपनी सत्ता के सुख में लीन।

चित्रकार बालादत्त पाण्डेय ने प्रदर्शनी में अपने पाँच चित्र प्रस्तुत किये थे–शिक्षा की निरुदेश्यता, दुरव्यवस्था तथा निरर्थकता जिनकी भूमिका थी। उनका सबसे सशक्त तथा लोकप्रिय चित्र था "सलीब पर टंगा अध्यापक"। यह सलीब और कुछ नहीं वहीं पुराना श्याम पट्ट है जिस पर चाक रूपी कीलियों से उसके जर्जर भूखे नगे शरीर को जड़ दिया गया है सामने एक अतिदीन, दुरवी कंकाल स्वरूप बालक जो समय से पहले बूढ़ा दिखने लगा है, ऐसे अध्यापक से शिक्षा ग्रहन करते दिखाया गया है। इसी प्रकार का इनका दूसरा भावोढेलक चित्र है–'ज्ञान का विस्फोट' इस चित्र में दीमक लगे अध्यापक तथा कंकाल स्वरूप बालक को ज्ञान के विस्फोट के सामने पूरी तरह हत्प्रभ होते दिखाया गया है। इस चित्र में सवाल उठाया गया है कि क्या भूवा नंगा अस्वस्थ व्यक्ति ज्ञान देने या प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है? 'भूखे भजन न होय गोपाला' वाली पक्ति चरितार्थ की गई है। इसी प्रकार अन्य तीन चित्रों में कलाकार पाण्डेय ने व्यंग तथा प्रतीको के सहारे शिक्षा की दुर्व्यवस्था पर अत्यन्त महत्वपूर्ण टीकायें की है।

"शिक्षा पर ग्रहण"– शिक्षा पर ग्रहण प्रस्तुत चित्र सन् १६८० में बम्बई की जहांगीर कला विथिका में समीक्षावादी ग्रुप की चित्रकला प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया था। जिसके विषय एवं चित्रण शैली की प्रशंसा श्री धर्मवीर भारती एवं अनुराग चतुवदी ने मुक्त कंठ से की है। चित्र "शिक्षा पर ग्रहण" में भारत में शिक्षा की वर्तमान स्थिति को दिखाया गया है। एक गरीब बालक, हाथ में एक बुझी हुई मोमबत्ती लिये हुये शिक्षा प्राप्त करने निकला है परन्तु वह अपने आप को अंधकार मे पाता है। आकाश में सूर्य रूपी शिक्षा जो एक खुली हुई पुस्तक के रूप में दिखाई गई है। ग्रहण ग्रसित है, बालक भूख्खा है। वह गरीब है, पेट का सवाल इतना विकराल है, इसके लिये कटोरे को विशेष रूप से बड़ा दिखाया गया है। स्वतन्त्रता के इतने वर्षों बाद भी यह बालक हाथ में पिचका हुआ कटोरा लिये सडको पर मिल जायेगा।" प्रतीकात्मक एवं व्यंग दृष्टिकोण से कलाकार ने आज के समाज में व्याप्त भृष्टाचार शोषण, विदुपता, बेईमानी कुटिलता आदि पद व्यंगात्मक प्रहार प्रतीकात्मक, संवेगात्मक शैली में किया है। "जैसा कि समीक्षावादी कला का मूल उद्देश्य मानव की सूक्ष्म भावनाओं को

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

इस प्रकार मूर्त रूप प्रदान करना है कि वह सहज ही अंतराम को छू ले और सहज ही ग्रहण हो जाये। एक सरल भाषा के रूप में अल्पमत को भी व्यक्त कर ले।

—बालदत्त पांडे

"धसती शिक्षा"— चित्र में चित्रकार बालादत्त पाण्डे ने शिक्षा की धरती ऐसी बनाई है कि वह श्यामपट के भार को वहन नहीं कर पा रही है और अध्यापक भी धस गया है। श्यामपट पर जो तिरंगा है राष्ट्रध्वज का प्रतीक है उसके रंग फीके पड़ चुके है। बूटियों पर अध्यापक की टोपी और बालक के भीख मांगने का कटोरा लटका है और अध्यापक तो धांस ही चूका है। यह चित्र "मैकालीय शिक्षा—पद्धति" के प्रभाव का प्रतीक है। चित्रकार ने वर्तमान शिक्षा एवं रोटी (ाजगार) के प्रश्न चिन्हों को प्रतीकात्मक शैली में प्रकट किया है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग के प्राध्यापक रघुवीर सेन धीर ४ के चार चित्र इस प्रदर्शनी में रख्खे गये है। धीर के चित्र अन्य कलाकारों से शैली तथा तकनीक में भिन्न थे। उन्होंने जैन चित्रकला के मूलाधारों पर प्रयोगात्मक ढंग से अपनी शैली निर्मित करने का प्रयास किया है। सपाट विरोध ी रंगों की चमकदार आ.तियों से इन्होंने चित्रों में अलंकारिक संयोजन के साथ—साथ वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर समीक्षात्मक चित्र बनाये है। उनके प्रभावशाली चित्रों में आपात काल का भूत' तथा 'रुपये पर शादी' उल्लेखनीय है। 'आपातकाल का भूत' शीर्षक चित्र में कलाकार धीर ने एक काले नरकंकाल को पहरे में रख कर ले जाते दिखाया है। 'रुपये पर शादी' नामक चित्र में दहेज की प्रथा पर व्यंग किया गया है। उनके दो अन्य चित्र थे 'आपातकाल का रथ' तथा 'उतार चढ़ाव'।

"प्रशिक्षण"— रघुवीर सेन धीर ने मध्य युगीन जैन (अपभ्रंश) शैली को आधार बनाकर अपने व्यंग—चित्रे को साकार किया है नेतृत्व अपनी लिप्सापूर्ण करने के लिये कितने हथकण्डे अपना सकती है। इसको साकार करने में धीर की तूनिका सदैव तत्पर रही इस चित्र में भी कुछ ऐसा ही विधान रचा जा रहा है इनके चित्रे को देखकर प्रतीत होता है कि कलाकार अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनैतिक तथा ध ार्मिक समस्याओं पर सीधी तथा स्पष्ट समीक्षा में, प्रस्तुत की है। चित्र विषय वस्तु प्रधान है। क्योंकि इससे कलाकार एक विषय चुनकर सोच विचार कर अपने लक्ष्य के मुताबिक ऐसी रचना करता है कि उसका चित्र तथा उसकी व्यंजना साधारण आदमी को भी समझ में आये।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के (श्री शुक्ल) के शिष्य संतोष कुमार सिंह के भी चार चित्र प्रदर्शनी में सम्मिलित किये गये थे। संतोष के चारों चित्रों में एक चित्र में 'कुर्सी पूजा' नामक चित्र बनाये है। उनके इस चित्र ने दर्शको इस चित्र की मूल अभिव्यंजना है। उनका दूसरा प्रभावशाली चित्र था 'नयी साम लीला' इस चित्र में आज के युवा वर्ग की चरित्रहीनता पर व्यंग किया गया है। जहाँ कहीं उनसे अपेक्षा थी कि वे राम लक्ष्मण की तरह समाज के दुश्मन रावण जैसे चरित्र, भ्रष्ट नेताओं का डट कर मुकाबला करेंगे, वहीं वे चमचों की तरह ऐसे पथभ्रष्ट नेताओं का पद चुम्बन करते देखे जाते है। इस बात को बड़े ही व्यंगात्मक तथा प्रभावशाली ढंग से संतोष ने अपने चित्र में अभिव्यक्त किया है। उनके तीसरे चित्र 'झगड़े की जड़' में कुर्सी के लिए किस तरह आज के पथभ्रष्ट पाशविक प्रवृत्ति का इस्तेमाल करने में नहीं चूकने का प्रभावशील स्वरुप उपस्थित हुआ है। अपने 'बंधी रोटी' नामक चित्र में उन्होंने समाज शोषक धन कुबेरों के घृणित प्रयास कर मर्म भेदी टीका प्रस्तुत की है। संतोष के सभी चित्र लोक भाषा में सशक्त माध्यम द्वारा प्रभावशाली प्रतीको बिम्ब तथा रंग योजना में अभिव्यक्त हुये है।

"घर का कुत्ता "— धन कुबेरों की दृष्टि में बंध ुआ बनकर रोटी पा सकते हो। खुली हवा में सांस लेने वाले हवा खा सकते है, रोटी नही। धन कुबेरों की दृष्टि में मनुष्य का मूल्य नही है क्योकि वह दरवाते पर बाँधकर भूकता नही। 'कुत्ता' उनके और मेम साहब के बीच होता है क्योकि वह मालिक के लिए भौकता है .... दाता के लिए भौकता है। श्री शुक्ल के अन्य शिष्य वेद प्रकाश के चारों चित्रों में बाढ़ से मुक्ति' नामक चित्र तथा 'गोवर्धनधारी' ने दर्शकों को बड़ा प्रभावित किया। 'बाढ़ से मुक्ति' शीर्षक चित्र में कुर्सी पर राजनीति पर मर्मस्पर्शी टीका की गई है। जहाँ सारा प्रदेश भयंकर बाढ़ की चपेट में डूब रहा हो और प्राण रक्षा ही एक मुख्य प्रश्न बन गया हो, वहीं नाक तक पानी में डूब कर कोई नेता मात्र अपनी कुर्सी की रक्षा करता दिखाई पड़े तो कितना हास्यास्पद और घृणित लगता है—यही इस चित्र में सशक्त कलात्मक कौशल के साथ अभिव्यक्त हुआ है। उनके दूसरे मर्मस्पर्शी चित्र 'गोवर्धनधारी' में एक छोटे से परिवार को सर पर पहाड़ उठाये दिखया गया है। कलाकार ने यहाँ आश्चर्य व्यक्त किया है कि साधारण परिवार आज के जीवन में व्याप्त भयंकर समस्याओं के बीच कैसे अपने परिवार की रक्षा कर पा रहा है। उसकी चेष्टा वैसी ही है जैसे बालक .ष्ण का गोवध ्न पर्वत उठा लेना।वेदन ने अपने अन्य चित्रों में नेता का जन्म' तथा 'आया राम गया राम' में आज की नेतागिरी पर करारारा व्यंग किया है। नेता बनाना एक पेशा हो गया है और इसके लिए कैसे लोग घृणित काम करने से बाज नहीं आते। यहीं इन चित्रों की मूल सवेदना है। दल—बदलुओं पर तीक्ष्य प्रहार किया गया है। वेद की शैली भी बड़ी ही स्पष्ट तीरवी तथा मर्मस्पर्शी बन पड़ी है।

"सुरक्षा"— जहाँ सारा देश बाढ़ की चपेट में त्रहि—त्रहि कर रहा है। प्राणों की रक्षा के लिए घर, धन—

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

धान्यादि को भी छोड बैठा हो। वही नेता गले तक डुबा हुआ भी कुर्सी के राजनीति खेल रहा है। कुर्सी दूसरा न छीन ले पावे......अतः कुर्सी को बचाने के लिए डूब जावेगा........ दूबो देगा।

(समीक्षावदी चित्रकार श्री केसरी कुमार मेहरोत्रा के महत्वपूर्ण चित्र इस प्रकार है।)

'फूल और फूल''— यह फूल एक बच्चा है जो नंगी जमीन पर खुले आकाश के नीचे अपने माँ के साथ बैठा है और अपने रूदन से जैसे अपनी पीड़ा माँ से कह रहा है। चेतन होते हुए भी जड़ की तरह बैठी उसकी माँ जाने लाचारी की किस दुनिया में खोई है। इनके पीछे चार दीवारी से घिरा एक प्रसाद है। इसमें खिले फूल ताजगी भरे प्रफुल्लित है। पेड़ जैसे उल्लास से झूम रहे है। प्रसाद की खिड़कियों से हरे शीशे लगे है जो लोग इस प्रसाद में रहते है और हरे कांच लगी खिड़कियो से बाहर देखते है, उन्हे हरियाली ही दिखाई देती है। बच्चे के हाथ में एक कॉंटे वाली टहनी है। इसी को लेकर यह अपनी जीवन यात्र आरम्भ करेगा। काटेदार तहनी ही जैसे इसका भविष्य है।

कितने ही खतरों से घिरे जन—सामान्य की यह व्यथा कथा है, कभी तो इन विषय परिस्थितियों से जूझता हुआ वह विजयी होता है, कभी पराजित हो जाता है, धरती और आकाश दोनों ही उसके प्रति उदार नही है, स्वतरों ये सुरक्षित नेता जन—सामान्य को आत्मबल बनाये रखने का उपदेश देता है, जन सामान्य को घर बाहर हर जगह घेरे हुए विषय परिस्थितियों को यह पेटिंग चित्रित करती है।

'आतंक''— विश्व की महा शक्तियाँ बाज की तरह पृथ्वी पर अपने पजे जमाये आक्रमण की मुद्रा में बैठी है, इस महा शाक्तियों ने तीसरी दुनिया को सुलगा दिया है, विनाश की ज्वाला धधक रही है। बाज की तरह एक दुसरे पर झपटने के लिए आक्रोश से भरी हुई अपने सशक्त पंजों में पृथ्वी के गोलार्ध को दबोचे ये कभी भी कोई भी प्रलय मचा सकती है, शाति का कपोत चिन्तित दूर चला जाना चाहता है।

समीक्षावाद से प्रभावित चित्रकार के कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक परिस्थितियों पर चित्र .तियों का मूल भाव इस प्रकार है:

'आहूति'— आधुनिक आपा—धापी के युग में बदी ने अपनी तूलिका को कभी भ्रमित नही होने दिया। वे भी तैल माध्यय अपना सकते थे, परन्तु उन्होने ऐसा नहीं किया। जल रंगो के द्वारा ही विशाल कैनवासी आधार पर ऐसे रचनाओं को साकार किया है जो अमूर्त होते हुए भी ह्रदय पर मूर्त हो जाते है। इस चित्र में समाज की असंगतियों, असमानताओं, कुसांस्कारों, कुण्ठाओं और आपातित दुर्भावनाओं रूपी राक्षस को भारतीय भूमि की अस्वीकार्य अग्नि में भस्म होते हुऐ दिवाया गया है। आहूति है इस चित्र का शीर्षक।

''सचित बहुमूल्य भू—निधि का राजा''— इनके चित्र में लहलहाते फसल के मध्य बैठा एक भारतीय .षक, हुक्के में दम लगाता, कितना निश्चित, कितना सुरवी और कितना गदगद है। वह इस पूरी भू—निधि का राजा है, किन्तु उसे क्या पता कल किस नेता, किस बाहुबली किस दुष्चक्र में फँसकर फिर वही नंगा नितांत अकेला और आँखों मे आँसुओं की लड़ी लिए इसी तरह बैठा रह जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक कला 'समीक्षावाद', लेखक— प्रो० रामचन्द्र शुक्ल की पुस्तक से साभार।
2. समीक्षावाद (एक कदम और आगे) लेखक—डा० गोपाल मधुकरचतुर्वेदी से साभार।
3. 'समीक्षावाद' 'प्रतिक्रिया आकार, उज्जैन, वर्ष ९ अंक ७, १९८० से साभार।
4. समीक्षावाद या आत्मालोचन' 'नव भारत टाइम्स नई दिल्ली, १८—०१—७६ से साभार।
5. 'समीक्षावाद' का वैचारिक आधार, रसज्ञा', जुलाई—दिसम्बर—१९७८ से साभार।

*****